पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.07.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

114वें डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जन्मोत्सव पर

राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ

सोमवार 6 जुलाई 2015
प्रातः 10 बजे
जन्तर मन्तर, नई दिल्ली
पर भारी संख्या में पहुंचे
— डॉ. अनिल आर्य

वर्ष-32 अंक-3 आषाढ़-2072 दयानन्दाब्द 191 01 जुलाई से 15 जुलाई 2015 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.07.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

जम्मु कश्मीर की वादियां 'ओ३म्' व वन्देमातरम् के जयकारों से गूंज उठी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का ''युवक निर्माण शिविर'' जम्मु में सोल्लास सम्पन्न

सीमावर्ती राज्य में आर्य संस्कृति को बचाने का कार्य आर्य युवकों को ही करना है - राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य

जम्मू। रविवार, 28 जून 2015,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन दिनांक 21 जून से 28 जून 2015 तक आर्य समाज जानीपुर कालोनी में किया गया। शिविर में 80 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिक्षक प्रणवीर आर्य, प्रदीप आर्य, गौरव आर्य, आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री ने शिक्षण प्रदान किया व वैदिक विद्वान आचार्य विद्याभानु शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा रहे व दैनिक उद्बोधन सुनने को मिलते रहे।

शिविर समापन पर डा.अनिल आर्य ने कहा कि इस सीमावर्ती क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार,राष्ट्रवाद का जागरण आर्य समाज को ही करना है। अपनी आर्य संस्कृति की रक्षा भी आर्य युवा शक्ति को संस्कारित करके हम सब को करनी है तभी हम ऋषि ऋण से उऋण हो पायेगे। इन युवा वाहकों के माध्यम से आपने घर घर तक अपनी बात पहुंचानी है।
चित्र में ध्वजारोहण का द्रश्य—मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य के साथ बांये से अरूण गुप्ता,आचार्य विद्याभानु शास्त्री,प्रान्तीय अध्यक्ष सुभाष बब्बर,अरूण आर्य,मुकेश मैनी,शिक्षक प्रणवीर आर्य,सरदार सुरेन्द्र सिंह। द्वितीय चित्र—राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते सुभाष बब्बर,अविनाश गुप्ता,डा.सुरेश अबरोल,सुरेन्द्र शर्मा बजरंगी,प्रान्तीय महामन्त्री रमेश खजुरिया,आचार्य विद्याभानु शास्त्री व मुकेश मैनी।

प्रान्तीय अध्यक्ष सुभाष बब्बर का स्वागत करते विधायक सुपुत्र,डा.अनिल आर्य,सुरेन्द्र बजरंगी, रमेश खजुरिया व सामने पहाड़ों से दूर दूर से आर्य युवा शक्ति का उत्साहवर्धन करने आये श्रद्धालु आर्य जन।

आर्य समाज की तैयार हो रही युवा शक्ति सैनिक अभिवादन करते हुए व जानीपुर कालोनी में निकाली गई शोभा यात्रा का सुन्दर द्रश्य। शिविर को सफल बनाने में पूर्व पार्षद रविन्द्र गुप्ता,मनोहरलाल बब्बर,कालीदास,रोशनलाल,अश्वनी बब्बर,हेमन्त चौहान,रमेश शर्मा, कपिल बब्बर, रूही बब्बर, राजीव सेठी,सुकृति चौधरी,राकेश शर्मा,पुष्पा गुप्ता, हंसराज,विनोद आर्य, लोकेन्द्र आचार्य, अरूण चौधरी आदि का विशेष योगदान रहा।

अमेरिका में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् पहुँची

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ग्रेटर होस्टन दिनांक 30 जुलाई से 2 अगस्त 2015 में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रेस सचिव श्री देवेन्द्र भगत के नेतृत्व में राकेश आर्य, विकान्त चौधरी,सुरेश आर्य,चन्द्र दुर्गा आर्य महासम्मेलन में भाग लेने जा रहे हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।।

योग द्वारा आध्यात्मिक नेतृत्व की पहल

—अवधेश कुमार

निस्संदेह, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में योग को विश्व संस्था द्वारा स्वीकारने का प्रस्ताव रखा तो हमें यह कल्पना नहीं थी कि वाकई इसे विश्व समुदाय की स्वीकृति आसानी से मिल जाएगी। पर ऐसा हुआ। 75 दिनों के अंदर 177 देशों के समर्थन से यह स्वीकृत हो गयां और अंतरराष्ट्रीय दिवस भी निर्धारित हुआ। भारत को ही वहां अपना पक्ष रखकर दुनिया को इसकी उपयोगिता समझानी थी। भारत ने सारे शोध, शास्त्रीय तर्कों के साथ बताया कि किस तरह योग आज के तनाव पूर्ण जीवन में स्वयमेव सामूहिक शीतलता का संचरण कर सकता है, यह बिगड़ती जीवन शैली से कायम होती असंतुलन और इसके भयानक पर्यावरणीय प्रभावों में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है, किस तरह यह मनुष्य के अंदर रोग पैदा होने से रोकने के लिए बिना किसी संसाधन के निरोधक शक्ति का कार्य करेगा, किस तरह यह अनेक रोगों से स्थायी मुक्ति का कारक बन सकता है.....। साफ है कि अगर 177 देशों से योग को स्वीकारने के प्रस्ताव का समर्थन किया तो वो इन सारे तर्कों से सहमत हुए। 177 देशों का मतलब है उसमें विश्व के 47 प्रमुख मुस्लिम देश भी शामिल हैं। तो योग की संयुक्त राष्ट्र संघ में स्वीकृति इस बात का भी प्रमाण था कि इसे विश्व के बहुमत ने किसी विशेष धर्म का आरोपण तथा सांप्रदायिक मानने से इन्कार कर दिया। यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विरासत की सर्वहितकारी होने की भी स्वीकृति थी। यह इस बात का प्रमाण पत्र है कि भारत का दृष्टिकोण वाकई विश्व कल्याण, मानव कल्याण है। इसकी संस्कृति सभ्यता में ऐसे पहलू व्याप्त हैं जिनसे वाकई विश्व समुदाय का कल्याण हो सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने यही कहा था कि भौतिक संताप से जलती दुनिया को भारत की आध्यात्मिक सलीला की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने यही कहा कि भौतिकता की जाल में उलझे विश्व को भारत अपने धर्म के आधार पर रास्ता दिखा सकता है। गांधी जी ने तो यहां तक कहा कि धर्म ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत दुनिया का नेतृत्व कर सकता है। मोदी ने बहुत सोच समझकर योग का चयन किया। पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश के साधु–संन्यासियों ने, योग शिक्षकों, आध्यात्मिक केन्द्रों, योग केन्द्रों ने विदेशियों को भारी संख्या में आकर्षित किया है एवं योग का समर्थन बढ़ा है। लेकिन उसे वैश्विक स्तर पर सांस्थानिक रुप नहीं मिल पाया था। उसे मान्यता नहीं थी। ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी के अंतर्मन में यह भाव सुदृढ़ हो चुका था कि भारत की विश्व के कल्याण में भूमिका की शुरुआत हम योग के प्रस्ताव से कर सकते हैं। इसके बाद अन्य परवर्ती प्रस्ताव और कदम उठाए जा सकते हैं।

तो 21 जून का अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दअरसल, भारत की विश्व का नेतृत्व करने की उस भूमिका की सक्रिय शुरुआत है जिसकी कल्पना हमारे मनीषियों ने की थी। मोदी की जिन देशों की यात्रायें कर रहे थे वहां इसकी स्वीकृति और स्वीकार्यता के लिए बात करते रहे,कुछ शुरुआत करवाने में सफल होते रहे। उदाहरण के लिए चीन और मंगोलिया यात्रा के दौरान हमने योग का साकार रुप देखा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने चीन दौरे के दूसरे दिन जब बीजिंग के टेंपल ऑफ हेवन पहुंचे तो वहां भारत के योग और चीन के ताई ची को मिलाकर एक कार्यक्रम रखा गया था। चीन के बच्चे योग कर रहे थे और भारत के बच्चे ताई ची। यहां पर मोदी ने अपने भाषण की योग के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अगर स्वर्ग की प्राप्ति करनी है तो मन, बुद्धि और शरीर तीनों का संतुलन आवश्यक है। इन तीनों ही चीजों पर संतुलन सिर्फ और सिर्फ योग से प्राप्त हो सकता है। वहां वे योग दूत बनकर अपनी भूमिका निभा रहे थे। इसके साथ युनां मिन्जु यूनिवर्सिटी में योग कॉलेज की स्थापना पर सहमति हुई थी। वहां शीघ्र ही योग का बाजाब्ता अध्ययन आरंभ हो जाएगा। चीन जैसे कम्युनस्टि देश में यदि विश्वविद्यालय में योग की शुरुआत हो रही है तो फिर दुनिया में इसका प्रसार होना निश्चित मानिए। चीन के बाद जब वो मंगोलिया पहुचे तो वहां के कम्युनिटी रिसेप्शन में लोगों को संबोधित करने से पहले सूर्य नमस्कार का प्रदर्शन हुआ। मोदी के सम्मान में मंगोलिया के लोगों ने कम्युनिटी रिसेप्शन के दौरान योग का प्रदर्शन किया।मोदी ने कहा कि उन्हें यह देखकर अच्छा लगा कि मंगोलिया के लोग सूर्य नमस्कार कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि मैं मंगोलिया के लोगों से आग्रह करता हूं कि विश्व योग दिवस 21 जून को सामूहिक योग कर दुनिया को दिखा दें कि योग के द्वारा रोग मुक्ति, शांति कैसे स्थापित होती है।

कहने का तात्पर्य यह कि योग दिवस आते–आते मोदी कई देशों में ऐसा भाव पैदा कर चुके थे जिनसे उसके विश्वव्यापी स्वीकृति का एक समग्र चित्र सामने आए। वैसे संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वीकृति के बाद सभी सदस्य देशों को इसके लिए औपचारिक तौर पर सूचित किया ही गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इससे जुड़ गया है। लेकिन हमें योग को विश्व स्तर पर स्वाभाविक स्वीकृति के लिए काफी कुछ करना होगा। जब हमारे प्रस्ताव से यह स्वीकृत हुआ है तो इसे उसके सही मुकाम तक पहुंचाने में सबसे ज्यादा परिश्रम भी हमें ही करना होगा। सबसे ज्यादा संसाधन हमें ही झोंकना होगा। बाजार के युग में योग को ब्राण्ड के रुप में स्थापित करना भी इसका एक महत्वपूर्ण अंग होगा। वो कैसे होगा?

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर तो 100 के करीब देशों के शिरकत करने की संभावना है और उसकी तैयारियां भी दिख रहीं हैं। लेकिन कुछ देशों में इसकी सघन उपस्थिति बनानी होगी। मोदी ने जैसे चीन को प्रेरित किया, मंगोलिया जैसे अनुकूल देश का चयन किया उसी तरह विदेश स्तर पर आगे करना होगा। पहले हमें ऐसे अनुकूल देशों को चिन्हित करना होगा जहां यह आसानी से सर्वग्राही हो सके। कम से कम ऐसे 25 देश हो सकते हैं जिनकी संस्कृति में इसके बीज किसी रुप में हैं। ?पहले वहां यह सर्वस्वीकृत हो। उसमें हमारे दूतावास की भूमिका होगी। अच्छा हो दूतावास में योग की एक ईकाई बन जाए....जहां से यह कार्य हो। उन देशों में भारतीय विद्यालय या अन्य केन्द्र होंगे वहां इसकी बाजाब्ता ईकाई बने। भारत के अंदर योग के जो मान्य और प्रतिष्ठित केन्द्र है, आश्रम हैं....उनको प्रोत्साहित करके सरकार इससे जोड़ सकती है। उनके संपर्क वैसे ही विदेशों में हैं। भारत सरकार इन्हें विदेशों में योग के लिए मान्यताप्राप्त प्रतिनिधि घोषित करे तथा यहां केन्द्र सरकार मं ऐसा विभाग हो जिनसे इनका सीधा संबंध रहे। वही विभाग संयुक्त राष्ट्र संघ से संपर्क में रहे। जहां भी सेवाएं देनी हो वहां संयुक्त राष्ट्र संघ और उसकी ईकाइयों का सहयोग ले। लेकिन सबसे बढ़कर स्वयं भारत में योग को एक आंदोलन बनाना होगा, पाठ्यक्रम का मुख्य भाग बनाना होगा। योग के विभाग विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में स्थापित हों। जब भारत में योग अपने मूल रुप में समाज में सर्वस्वीकृत होगा, छात्र, नवजवान इसमें शिक्षित होकर निकलेंगे, उनके अंदर इसके प्रचार की प्रेरणा होगी तो वे जहां जाएंगे लोगों को योग से जोड़ेंगे। जब तक भारत में इसका स्वाभावक ठोस आधार नहीं होगा, हम विश्व समुदाय को योग के माध्यम से शारीरिक मानसिक और अंततः आध्यात्मिक परिवर्तन लाकर शांति, संतुलन, संवेदनशीलता, आपस में और प्रकृति के साथ परस्पर सहकार की स्थिति कायम नहीं कर पाएंगे।

इसलिए अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हमारे लिए स्वयं इसकी तैयारी का दिवस बनना चाहिए। लेकिन भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो इसकी आध्यात्मिक शक्ति को नहीं समझते। वे योग के विस्तार को भारतीय विदेश नीति के सॉफ्ट पावर के रुप में भी नहीं स्वीकार सकते वे इस पर होने वाले व्यय को बेकार साबित करेंगे। इसके खिलाफ आवाज उठाएंगे। उनसे हमें निपटना होगा। वे मानने वाले नहीं। आखिर एक मजहब के विरुद्ध योग को साबित करने वाले सक्रिय है हीं। विश्व भले इसे स्वीकार कर ले, पर इसे संघ का एजेंडा भी बताया जा सकता है। ये सारी बाधायें हमारे सामने अपने घर में ही है। अच्छा है प्रधानमंत्री स्वयं उस दिनयोग कर रहे हैं और पूरे देश में ऐसा हो रहा है। इसका असर होगा लेकिन हमें इसे सांस्थानिक स्वरुप देना होगा। भारत में योग को आध्यात्मिक आंदोलन के रुप में खड़ा करना होगा। इसके बाद भारत विश्व में योग आंदोलन की शुरुआत करे और इसे मुकाम तक ले जाए। यह एकमात्र कार्य अगर ठीक से हुआ तो दुनिया भर के लोगों के अंदर भारत के प्रति जो लगाव, आकर्षण, श्रद्धा और प्यार कायम होगा वह हमारे देश को विश्व की बहुमत आबादी के लिए एक आदर्श, प्रेरक और आध्यात्मिक महाशक्ति बना देगा। इसके लिए न सैन्य शक्ति की जरुरत है, न बहुत ज्यादा आर्थिक मांसपेशियों की। तो आइए, हम आप मिलकर योग आंदोलन का भाग बने, इसे भारत के आम जीवन का अंग बनाएं ताकि यह विश्व का जीवन अंग बन जाए।

– ई.:30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली:110092, मो 09811027208

आर्य समाज अल्मोड़ा में स्वागत व बागेश्वर में ''तुलसी'' भेंट

बुधवार, 17 जून 2015, आर्य समाज,अल्मोड़ा में डा.अनिल आर्य को चित्र भेंट करते उतराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री दयाकृष्ण काण्डपाल व समाज के मन्त्री दिनेशचन्द तिवारी। द्वितीय चित्र–बागेश्वर में डा.अनिल आर्य को तुलसी भेंट करते किशनसिंह मलेरा (वृक्षप्रेमी),गोविन्दसिंह भण्डारी,श्यामलाल टम्टा आदि

धारचुला स्टेडियम (नेपाल बार्डर) पर डा.अनिल आर्य ने किया योग समारोह का उद्घाटन

पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड। रविवार, 21 जून 2015 को विश्व योग दिवस के अवसर पर पतजंलि योग समिति द्वारा धारचुला स्टेडियम में आयोजित योग दिवस का उद्घाटन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने दीप प्रज्जवलित करके किया। उनके साथ आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान गोविन्दसिंह भण्डारी, लक्ष्मनसिंह कठैत, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, प्रवीन आर्या, आस्था आर्या, योगेन्द्र शास्त्री, अरूण आर्य, कमल आर्य, गम्भीर सोंलकी, रोहित शर्मा आदि विद्यमान थे।

बागेश्वर उत्तराखण्ड में युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

शुक्रवार 19 जून 2015, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय इन्टर कालेज, भण्डारी सेरा, बाजीरोट, काण्डा में युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। मंच पर डा. अनिल आर्य, विधायक ललित फर्सवान, शेरसिंह छपोला, हरीशचन्द्रसिंह ऐठानी, सुनील भण्डारी, गोविन्दसिंह भण्डारी, श्यामलाल टम्टा, किशनसिंह मलेरा आदि उपस्थित रहे। समाज के प्रधान प्रयागसिंह भण्डारी ने संचालन किया। शिक्षक सचिन, योगेन्द्र शास्त्री, अरूण आर्य, गम्भीर सोंलकी, रोहित शर्मा ने शिक्षण दिया व आचार्य सन्दीप वैदिक, देवेन्द्र सत्यार्थी के मधुर भजन हुए। सामने मैदान में व्यायाम प्रदर्शन का सुन्दर द्रश्य।

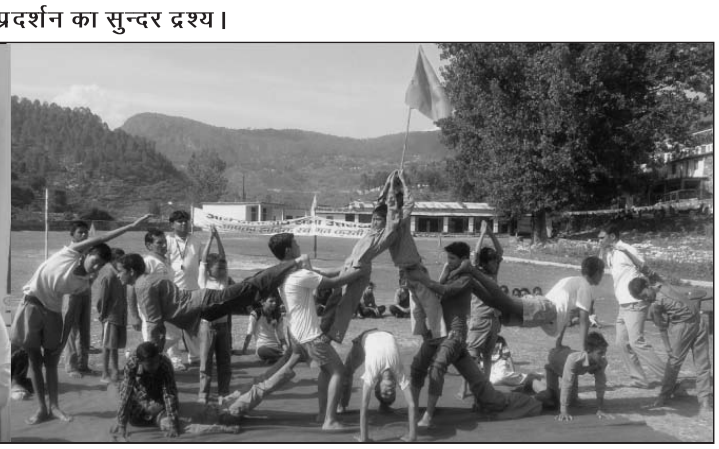

डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए, साथ मे आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, विधायक ललित फर्सवान, हरीशचन्द्र ऐठानी, सुनील भण्डारी आदि व सामने स्तूप बनाते युवक।

अस्कोट पिथौरागढ़ के राजा साहेब श्री भानुराजसिंह पाल से भेंट

शनिवार, 20 जून 2015, अस्कोट के राजासाहेब भानुराजसिंह पाल को युवा उद्घोष भेंट करते डा.अनिल आर्य व गोविन्दसिंह भण्डारी। द्वितीय चित्र में चर्चा करते हुए राजासाहेब ने कहा कि आर्य समाज का चरित्र निर्माण व आर्य संस्कृति को बचाने का कार्य सराहनीय है इसे ओर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

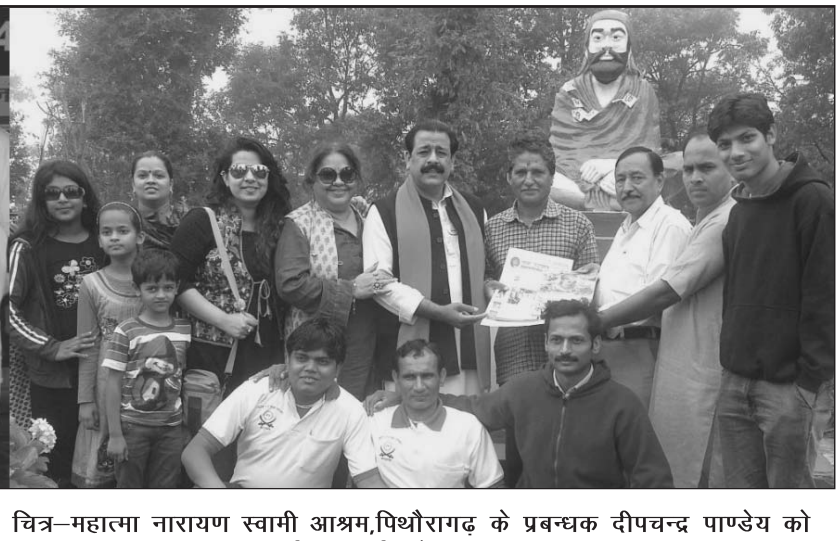

अमेटी युवक शिविर के विजेता युवक राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के साथ व द्वितीय चित्र–महात्मा नारायण स्वामी आश्रम,पिथौरागढ़ के प्रबन्धक दीपचन्द्र पाण्डेय को युवा उद्घोष भेंट करते हुए परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, गोविन्द सिंह भण्डारी, प्रवीण आर्या, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री आदि।

जयपुर राजस्थान में युवक चरित्र निर्माण शिविर सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 21 जून 2015, आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में युवक चरित्र निर्माण शिविर का सफल आयोजन श्री यशपाल यश के कुशल नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यशोवीर आर्य,महामन्त्री महेन्द्र भाई,रामकृष्ण शास्त्री,(बहरोड), वीरेन्द्र आर्य(जीन्द), हिमांशु,अनुज आर्य, पिन्टु आदि पंहुचे। अब हर ओर आर्य युवक अंगड़ाई ले रहे हैं,हार्दिक बधाई। शिविर का उद्घाटन जस्टिस प्रशांत अग्रवाल ने किया व समापन पर राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री कैलाश मेघवाल मुख्य अतिथि रहे।

करनाल में आर्य कन्या शिविर सम्पन्न : नशा मुक्त समाज की स्थापना का संकल्प

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के संयुक्त तत्वावधान में 24 जून से 28 जून 2015 तक आर्य समाज,प्रेम नगर,करनाल में आर्य कन्या शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में 90 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, सभा प्रधान सत्येन्द्रमोहन कुमार, चौ.लाजपतराय आर्य, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, महेन्द्र भाई, अकिंत उपाध्याय, रामकुमार सिंह, यज्ञवीर चौहान, शमशेर आर्य, अजय आर्य, रोशन आर्य, सन्तोष आर्या, सौरभ गुप्ता, अर्जुनदेव वर्मा, सुरेश आर्य, सूरज गुलाटी आदि के पुरूषार्थ से शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिला अध्यक्ष स्वतन्त्र कुकरेजा ने कुशल संचालन किया। इस अवसर पर नशा मुक्त समाज की स्थापना का संकल्प लिया गया।

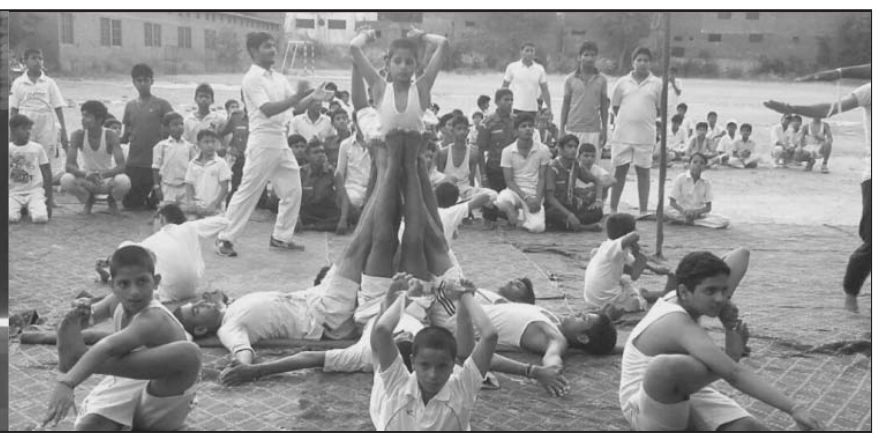

रविवार, 14 जून 2015,समर्पण शोध संस्थान साहिबाबाद में स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव के अवसर पर सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य,स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती,आर्य तपस्वी सुखदेव जी मंच पर। श्रद्धानन्द शर्मा,दर्शन अग्निहोत्री,राजेन्द्र भटनागर,प्रेमलता भटनागर,राकेश भटनागर,रमेश भटनागर, प्रवीण आर्य, सत्यवीर चौधरी, के.के. यादव आदि भी उपस्थित रहे। द्वितीय चित्र–फरीदाबाद शिविर में युवक स्तूप बनाते हुए।

मुनस्यारी, पिथौरागढ़ के समाज के प्रधान श्री रूद्रसेन पन्डा (पूर्वमन्त्री, उत्तराखण्ड सरकार) व धारचुला (नेपाल बॉर्डर) आर्य समाज के प्रधान लक्ष्मणसिंह कठैत का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य व गोविन्दसिंह भण्डारी ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970